विचार बिन्दु

अपना जीवन लेने के लिए नहीं देने के लिए है। –स्वामी विवेकानंद

डिजिटल आभासी संसार भौतिक जगत को प्रभावित करता है

अब एक डिजिटल संसार है। मानव जिस संसार में रहता है उसे प्रकृति ने इस धरती के भौतिक जगत में रचा। विज्ञान की बडी छलांग लगाते हुए मानव ने भौतिक संसाधनों के जरिये डिजिटल संसार रच दिया। यह डिजिटल संसार आभासी दुनिया है जो भौतिक अस्तित्व में नहीं होते हुए भी भौतिक जगत के लिए है। अब जब संसार होगा तो संवाद, अभिव्यक्ति, विरोध और संचार भी होगा। भौतिक संसार में संचार का नियामक समाज रहा है। समाज की ही एक इकाई के रूप में राज्य की भी भूमिका रही है। समाज और राज्य अपने अनुभवों से संचार के नैतिक प्रतिमान बनाते रहे हैं। लोकतान्त्रिक व्यवस्था में सामूहिक समझ से उनका नियमन होता है। मगर समाज और व्यक्ति के बीच खींचतान भी हमेशा चलती रही है। मानव की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता किस सीमा तक स्वीकार्य है और मानव की समाज से अस्वीकृति किस हद तक जा सकती है, यह मुद्दा भी हमेशा बना रहा है। जोधपुर के विलक्षण बुद्धिजीवी हरीश जोशी की आधी सदी से अधिक पहले आई पुस्तक: 'सामाजिक मानव और अमानवीय समाज' ने इसे जिस प्रकार रेखांकित किया वह आज भी प्रासंगिक है क्योंकि यह वैचारिक द्वन्द्व इस समय फिर से सब को झकझोर रहा है। आभासी दुनिया की धमाकेदार उपस्थिति ने इस मुद्दे को और धार दे दी है। उत्पादों के प्रचार के लिए कंप्यूटरों के अंतर्जाल से बनी आभासी दुनिया में बाज़ार को लोक संवाद और जन संचार का कारोबार भी रास आ गया। कारोबारी कंपनियों ने उपयोगकर्ताओं को 'सोशल मीडिया' के मुफ़्त मंच उपलब्ध करा दिए जो अप्रत्याशित रूप से लोकप्रिय हो गये। इन मंचों पर लोग एक दूसरे से जुडें, अपनी दिलचस्पियों का साझा करें, अपनी बात कहें, किसी चीज से नाइत्तफ़ाक़ी है तो उसका विरोध करें यह अनुभव सभी को बहुत भाया। दुनिया भर में एक मर्तबा लगा कि सीमाओं की बाधा नहीं होने से कोई भी अधिनायकवादी राज्य लोक की आवाज़ को दबा नहीं सकेगा और क्रांतियां हो जाएगी। इससे राज्य के नियंताओं और अभिव्यक्ति के नये मंचों की कंपनियों के बीच स्वाभाविक ही ठन गई। राज्यों को लगता है कि आभासी दुनिया का सोशल मीडिया भौतिक जगत में लोगों को राजनैतिक, वैचारिक और धार्मिक समूहों में बांट रहा है, उनमें आपस में वैमनस्य बढा रहा है।

वास्तव में आज के डिजिटल समय में कुछ भी निजी नहीं रहा है। वहां जो भी बात होती है वह अंतत: सार्वजनिक हो जाती है। तब प्रश्न उठता है कि डिजिटल ज़माने में क्या जनसंचार जैसी कोई चीज होती हैं? यह तो सिर्फ संचार है। यहां हम कभी अपने आप से बात करते हैं, कभी मैसेंजर के माध्यम से किसी दूसरे से बात करते हैं। कभी हम फ़ेसबुक के माध्यम से व्यक्तियों के समूह से बात करते हैं। ट्विटर के जरिये इन सब से आगे जाकर विराट संख्या में लोगों से बात करते हैं। अब क्या बात की जाती है उससे आभासी दुनिया को कोई सरोकार नहीं होता। इंटरनेट पर लिखना और लिखे का साझा करना सरल हो गया है। मगर लेखन की शैली बदल गई है। उत्पाद की तरह ही अपनी बात को बहुतों तक पहुंचने के लिए यहां की वर्ड्स लिखने पडते है। इससे लिखी बात को, चित्र को या वीडियो को लोकप्रिय या वायरल किया जाता है। सर्च इंजिन ऑपटिमाईजेशन का ध्यान रखा जाता है। यह कारोबार के लिए था जिसका उपयोग करना चतुर राजनेता और समाजकंटक भी सीख गये हैं। यही सब सीखते हुए सोशल मीडिया के पाठ्यक्रम भी विश्वविद्यालयों में आ गये हैं। इन्हीं योग्यताओं से ट्रोलिंग में बेहूदा बातें भी जम कर होती हैं। पीछे पड लिया जाता हैं किसी के। विरोध में तर्क से अपनी बात नहीं राखी जाती बल्कि व्यक्तिगत तरीके से हमला किया जाता है। कोशिश होती है कि सामने वाले की हिम्मत टूट जाए।

यह सच है कि डिजिटल सोशल मीडिया भौतिक मीडिया के विपरीत ऐसा मंच है जहां किसी का नियंत्रण नहीं है। वहां किसी भी रूप, भाषा और शैली में अपनी बात दर्ज करने के लिए हमें किसी संपादक की सहमति की दरकार नहीं होती। सोशल मीडिया के मंच (प्लेटफ़ॉर्म) चलाने वाली कारोबारी कंपनियां यह कह कर अपना पल्ला झाडती लेती हैं कि उन्होंने तो केवल जगह दी है वहां कौन क्या करता है उसके लिए वे जिम्मेवार नहीं हैं। क्योंकि आभासी मंचों पर कोई भी सरकार केवल अंतर्जाल के तंत्र को बंद करके ही नियंत्रण कर सकती है इसलिए अनेक सरकारें अनेक मौकों पर इंटरनेट सेवा ही बंद कर देती हैं। ऐसा करने वाले देशों की सूची में भारत का नाम तीसरे नंबर पर आता है। राजस्थान में तो परीक्षाओं के दौरान भी इंटरनेट सेवाओं को बंद कर दिया जाना हमने देखा है। इसी माहौल में इन मंचों को नियंत्रित करने के लिए लिए दुनिया भर में और भारत में भी वैधानिक ढांचा बनाया जा रहा है। हमारे यहां इन प्लेटफ़ॉर्म को चलाने वाली दो बडी कंपनियां मेटा (फ़ेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब आदि) और ट्विटर तथा शासन के बीच अदालती लड़ाइयां भी जारी है।

ट्विटर एक हाइकू की तरह है। यहां आपसे अपेक्षा होती है कि आप संक्षिप्त और प्रभावी तरीके से अपनी बात रखें। सिर्फ अपने विचारों का सारांश प्रस्तुत करें। वे लोग जो बदलते समय के साथ कदम मिलाना चाहते हैं और जानना चाहते हैं कि दुनिया कितनी तेजी से बदल रही है वे इसे अपनाते हैं तो इसी के हो कर रह जाते हैं।

सोशल नेटवर्क की माइक्रो ब्लॉगिंग साइट ट्विटर को चलाने वाली कंपनी और उसे खरीदने वाले एलन मस्क अभी खूब चर्चाओं में है। इस प्लेटफ़ॉर्म पर अभिव्यक्ति की निर्बाध आज़ादी को लेकर भी वैचारिक और कानूनी दोनों स्तर पर चर्चाएं गरम हैं। इस सोशल नेटवर्किंग और माइक्रो ब्लॉगिंग साइट के करोड़ों मुरीद हैं। वेब मेट्रिक्स एलेक्सा के आंकड़े कहते हैं कि अमेरिका और जर्मनी के बाद भारत वह तीसरा देश है जहां लोग सबसे ज्यादा ट्विटर पर हैं। जनवरी 2022 में भारत में ट्विटर के कुल दो करोड 36 लाख उपयोगकर्ता थे। इंटरनेट पर कारोबार का आकलन करने वाली कंपनी कॉमस्कोर इंक इससे आगे बढकर जनकारी देती है। कंपनी का कहना है कि भारत में ट्विटर का इस्तेमाल करने वाले ज्यादातर लोग 15 से 24 साल के बीच के हैं। बेशक, ट्विटर का इस्तेमाल करने वाले ज्यादातर लोग युवा हैं लेकिन ये वे लोग नहीं जो ट्विटर पर सबसे ज्यादा असर छोडते हैं। ट्विटर को सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाले लोगों की उम्र 30 साल या उससे ज्यादा है। ये लोग मीडिया, राजनीति और शिक्षा के क्षेत्र से जुडे हुए हैं। ये वे लोग हैं जिनके विचारों से लोग प्रभावित होते हैं, जिनकी लिखी हुई बातों को लोग पढना चाहते हैं। ट्विटर की खास बात यही है कि यहां आपको कम शब्दों में बहुत कुछ कहना होता है। ट्विटर पर उपयोगकर्ता को स्पेस, फ्रीडम और च्वाइस मिलती है। वहां कोई संपादक नहीं है। यहां राजनीति के खिलाड़ी ही नहीं किसी भी समसामयिक मुद्दे पर जम कर विचार प्रकट करने वाले लोग भी मौजूद हैं।

ट्विटर को यह नाम उसके जन्मदाता जक डोरसी ने इसलिए दिया था क्योंकि उनकी कंपनी चाहती थी कि दुनिया भर की उत्तेजना, व्यग्रता और बेचैनी को कैद किया जा सके। शब्दकोश में ट्विटर का अर्थ है- चिडियों की चहचहाहट। इस साइट के लिए यह नाम इसलिए अच्छा था कि एसएमएस टाइप संदेशों के माध्यम से लोग अपनी बात लोगों को पहुंचा सकें- एक समूह में ट्विट कर सकें। उनकी चहचहाहट इंटरनेट की दुनिया में गूंजे। जब ट्विटर की शुरुआत हुई, तब इस पर ट्विट करने वालों का मकसद सिर्फ नेटवर्किंग और दोस्त बनाना था। वे बेमतलब की बातें भी किया करते थे। अब भी फ़िल्म अभिनेत्रियां या सेलेब्रिटीज़ अपनी रोजमर्रा की जिंदगी के बारे में बातें कर लिया करते हैं जो खूब हिट होती हैं क्योंकि उनकी जिंदगी में दिलचस्पी लेने वालों की कमी नहीं। लोगों का कहना है कि शॉर्ट मैसेज, यानी अधिक से अधिक 140 शब्दों में अपनी बात कहने की कला, बहुत प्रभावी होती है। 'ट्विटर आपको बाध्य करता है कि आप अपनी बात टू द प्वाइंट कहें। हालांकि बहुत से लोग जो अपने लंबे लेख साझा करना चाहते हैं वे अपने लेखों के लिंक्स दे कर रास्ता निकाल लेते हैं। किसी ने कहा है कि ट्विटर एक हाइकू की तरह है। यहां आप से अपेक्षा होती है कि आप संक्षिप्त और प्रभावी तरीके से अपनी बात रखें। सिर्फ अपने विचारों का सारांश प्रस्तुत करें। वे लोग जो बदलते समय के साथ कदम मिलाना चाहते हैं और जानना चाहते हैं कि दुनिया कितनी तेजी से बदल रही है वे इसे अपनाते हैं तो इसी के हो कर रह जाते हैं। उन्हें बहुत से फॉलोअर्स मिल जाते हैं जो इसे उनके लिये नशा बना देते हैं।

ट्विटर पर दुनिया के लगभग सभी प्रमुख राजनेताओं की उपस्थिति दर्ज है और अब बडे राजनेता प्रेस विज्ञिप्तयां जारी करके अपनी बात अपने फॉलोअर्स तथा अन्य तक नहीं पहुंचाते बल्कि इस प्लेटफ़ॉर्म से सीधे ही लोगों तक पहुंचाते हैं। अब तो सरकारें भी अपनी नीतियों तथा कार्यक्रमों की घोषणाएं ट्विटर पर ही करती हैं। परंपरागत मीडिया के संपादकों का दखल और उनका रुतबा इस डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म से समाप्त हो गया है। मीडिया रिपोर्टरों को भी यह बहुत मुफीद आया है। ट्विटर यूजर्स की टिप्पणियां और सवाल, उनकी रिपोर्टों के लिए बहुत उपयोगी होते हैं।

आंकड़े बताते हैं कि अधिकांश ट्विटर उपयोगकर्ता सुपर सक्रिय नहीं होते हैं। इसका मतलब है कि ज्यादातर लोग ट्विटर का इस्तेमाल कुछ देने की बजाय उपभोग करने के लिए कर रहे हैं। उन्हीं के दिमागों को प्रभावित करने के लिए विशेष समूह सक्रिय रहते हैं। डेटा से पता चलता है अमेरिका में 10 प्रतिशत ट्विटर उपयोगकर्ता सभी अमरीकी उपयोगकर्ताओं के 92 प्रतिशत ट्वीट्स के लिए ज़िम्मेदार हैं, जिसका अर्थ है कि उपयोगकर्ताओं का एक विशेष रूप से सक्रिय समूह सामग्री का एक बड़ा हिस्सा वहां डाल रहा है। यही कहानी भारत और अन्य जगहों की है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

कलम वाले नक्सली, कैसे???

"बन्दूक वाले नक्सली हों या कलम वाले, सबका हल खोजें" यह ,29 अक्टूबर 22 के, जयपुर के एक प्रमुख हिंदी अखबार के प्रथम पेज पर शीर्ष हैडिंग है। प्रधान मंत्री के अनुसार....."नक्सलवाद को खत्म करना होगा वह चाहे बन्दूक वाले नक्सली हो या कलम वाले।"

जयपुर से ही प्रकाशित एक शीर्ष अंग्रेजी अख़बार नें इसे कुछ यों छापा है:-" every form of Naxalism,-- with guns or--with pens, be uprooted to prevent them from misleading the youth.--- warned that such forces are increasing their intellectual shere to pervert the minds of coming generations.-- can not be allowed to flourish for-- unity and integrity --nation."

हर कोई सहमत होगा कि हथियार से मसलों का हल करने वाले अपराधी होते है। हिंसा जब पूरे समाज के बडे हिस्से को एक साथ, लगातार प्रभावित करने लगे तो यह आतंकवाद है।

लोकतंत्र में सशस्त्र क्रांति की जरूरत नहीं होती। वोट से सरकार बदली जा सकती है। किन्तु यदि सरकार अन्याय पर उतर आए, मनमानी करे अथवा गलत तरीके से वोट लेकर सत्ता हासिल करे तो क्रांति भी हो सकती है लेकिन यह जनक्रांति होनी चाहिए। लोकतंत्र में जनबल ही सरकार को हटा सकता है।

लेकिन कलम से नक्सलवाद कैसे? कलम से तो विचार निकलते है। विचार अच्छे, खराब, हिंसा उकसाने वाले, नफरत फैलाने वाले हो सकते है। खराब, हिंसा, नफरती विचारों से कोई अपराध का रास्ता पकडता है तो ऐसे अपराधों से निपटने के लिए कानून बने हुए हैं।

आवश्यकता इन कानूनों के अनुसार शीघ्रता से, सख्ताई से, सही सही, निष्पक्ष कार्यवाही करने की है।

क्या है नक्सलवाद?

क्या अलगाववादी आतंकी और तथाकथित नक्सली एक जैसे ही है?

बंगाल के गांव नक्सलबाडी से प्रारम्भ नक्सलवाद, भूमि मालिकों-जमीदारों के खिलाफ भूमि जोतने वालों का आंदोलन था। आंदोलन माओवादी कमन्युस्टों की विचारधारा से प्रभावित था।आंदोलन शांतिपूर्वक नही रहा और हिंसक हो गया। वर्तमान में नक्सली सामान्यत्या सरकारी कर्मचारियों, पुलिस वालों को निशाना बनाते है।

नक्सली सामान्यत: केवल उन अदिवासियों व अन्य नागरिकों को ही निशाना बनाते हैं , जिनके बारे में मुखबिरी करने का संदेह हो । सरकार इस समस्या का समाधान केवल पुलिस व अर्ध सैनिक बलों की गोलियों के माध्यम से ढूंढ रही है।

यक्ष प्रश्न यह है कि क्या गोली से समाधान निकलेगा?

5 दशक का लम्बा समय बीत गया। सैंकडों पुलिस वाले व नागरिक इन संघर्षों की भेंट चढ गए--समाधान तो निकला नहीं !!

नक्सलवाद और आतंकवाद में भारी अंतर है। नक्सली, साधारणतया नागरिकों के दुश्मन नहीं हैं जबकि आतंकवादी शास्त्रबलों, राज्य के कर्मचारियों के साथ -साथ और मुख्यतया निरपराध जनता में खौफ फैलाने और मारने का काम करते हैं। कुछ आतंकवादी देश से अलगावाद का रास्ता अपनाते है व कई बार पडोसी देशों के उकसावे व अपरोक्ष समर्थन से ऐसा करते हैं।

नक्सलवाद वस्तुत: एक हिंसक वर्ग संघर्ष था और अब भी समय समय पर होने वाली हिंसक घटनाएं की जड में वर्ग संघर्ष ही है।

आजादी के बाद पीजेंटरी व खेतिहर मजदूर क्लास को यह उम्मीद थी कि उन्हें उन जमीनों का मालिक बना दिया जाएगा जिस पर वे पीढ़ियों से, राजे, रजवाडों,

महावीर सिंह

जमींदारों के लिए काम कर रहे थे। किसानों की दिक्कतों को पहचानने वाले माणिक्यलाल वर्मा, बलदेव राम मिर्धा, कुभा राम जी, सरदार हरलाल सिंह व अन्य बहुत से अग्रणी किसान नेता थे। यहां भी किसान आंदोलन हुए। बिजोलिया के आंदोलन से तो सब परिचित है। अन्य कई स्थानों पर भी आंदोलन हुए। डीडवाना का डाबड़ा कांड, झुंझुनू में करणी राम, रामदेव के बलिदान, सीकर का गोठड़ा कांड जैसी कई हिंसक घटनाओं के बावजूद 1948 से 1956 के मध्य अनेक भूमि सुधार कानून बने और शीघ्रता-दृढ़ता-ईमानदारी से लागू हुए। अगर यह कानून लागू नहीं होते तो बहुत मुमकिन है कि यहां भी हिंसक वर्ग संघर्ष होते जैसे बंगाल, बिहार में हुए।

इस समस्या को केंद्र सरकार ने समझा। कृषि भूमि सीलिंग कानून बनाने के लिए राज्यों पर दबाव बनाया और लागू करवाए। यधपि बड़े जमीदारों के विरुद्ध बड़ी मंथर गति से इनका क्रियान्वयन हुआ। कहीं-कहीं, अनेक प्रकार के हथकंडे अपना कर अब भी कई बड़े जमींदार है किंतु वे गिनती के हैं।

कुछ सुझाव:-

नक्सलियों के संदर्भ में बोले जाने वाले, सो कॉल्ड रेड कॉरिडोर के आदिवादियों और अन्य वनवासियों की भी बहुत ही जायज समस्याएं थी और अब

■ वर्तमान में नक्सली सामान्यतया सरकारी कर्मचारियों, पुलिस वालों को निशाना बनाते हैं

भी है। उनके द्वारा जोती जा रही वन भूमियों पर उन्हें अधिकार देने का काम अनिच्छया व मंथर गति से हो रहा है। इसमें समयबद्ध तरीके से शीघ्र पूर्ण किया जाए बहुत से वन क्षेत्रों के सीमांकन के समय वनों में रहने वालों के जोत के क्षेत्रों व अन्य वन अधिकारों की सही पहचान नही हुई। इस कारण इनका शोषण हुआ और हो रहा है।

आदिवासी क्षेत्रों में पर्यावरण कानूनों का सही सही पालन हो। बडे उद्योगों, खनन क्षेत्रों की स्वीकृतियां आनन फानन में नहीं होकर पर्यावरण नुकसान के पूर्ण मूल्यांकन व पुनर्वास योजना के लागू होने के बाद हो।

मिड डे मील योजना के क्रियान्वयन में सुधार-उसका विस्तार हो।वन क्षेत्रों में रहने वालों में से ही स्वास्थ्य कर्मियों, आंगनबाडी की सखी-साथिनों की अधिकाधिक नियुक्तियां हों। सरकारी कार्यालयों व व्यवसाय-उद्योगों में अधिकाधिक अदिवासियों का सद्भावना से (खानापूर्ति के लिए नहीं) नियोजन हो। सरकारी अधिकारियों-कर्मचारियों के अधिक से अधिक दौरे, रात्रि विश्राम भी कॉन्फिडेंस बिल्डिंग के आवश्यक अंग हैं।

चंबल के बीहडों में डाकुओं की समस्या थी। गोली से तो समाधान नहीं हुआ। गोली की आड में तो कई नए शहरी और कर्मचारी-अधिकारी डाकू पनप गए । समाधान व शांति के लिए गांधीवादियों के प्रयासों को ही सफलता मिली। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में भी बहुत से लोग-संस्थाए वन क्षेत्रवासियों को मुख्यधारा में लाने के प्रयास कर रहे है। इनके माध्यम से नक्सलियों से वार्ता समाधान का मुख्य रास्ता हो, गोली का रास्ता पीछे रखा जाए।

जब कश्मीर समस्या पर वार्ताओं का दौर पर दौर चल सकता है तो फिर नक्सलियों से क्यों नहीं? नक्सली तो कोई अलग देश भी नहीं चाहते।

राज व्यवस्था के एक्शन ही सदैव सही नही माने जा सकते। इतिहास गवाह है हर राजव्यवस्था अपनी असफलताओं, ज्यादतियों, आत्ममुघता के कारण समाप्त होते आई है। तत्कालीन राजव्यवस्थाओं ने तो मुगल शासन के खिलाफ जाटों की बगावत, 1857 के स्वतंत्रता संग्राम को, जलिया वाला बाग, मानगढ व अन्याय के विरुद्ध उठे अन्य कई आंदोलन व उनसे उपजी हिंसक घटनाओं को राजद्रोह ही माना था। राजव्यवस्था, उसके द्वारा पोषित वर्ग की ज्यादतियां बढ जाती है तो उनकी आवाज बनने वाला कोई गोकुल जाट, कोई मंगल पांडे, कोई वीर शिवाजी प्रगट होते ही रहे हैं।

ओर पीछे जाएं तो, श्री कृष्ण के नए विचारों से ही कंस-जरासंध के अत्याचारी शासनों का अंत हुआ, चाणक्य के नए विचारों से महानन्द के अत्याचारी शासन का अंत हुआ। कंस, जरासन्ध, महानन्द के लिए भी भगवान कृष्ण, चाणक्य तो राजद्रोही ही रहे होंगे। कलम से उपजा यूरोपीय पुनर्जागरण, फ्रांस की क्रांति, समाजवाद-साम्यवाद विचारधाराएं भी तत्कालीन राजव्यवस्थाओं के लिए राजद्रोह ही थी। ईरान में हिजाब को लेकर आजकल जो रहा, उसे राजद्रोह-नक्सलवाद मान सकते हैं क्या? भूतकाल से लेकर वर्तमान तक के अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। इसलिए कलम से निकले विचार सदैव के लिए आतंक-नक्सलवाद से नही जोड़े जा सकते। आवश्यकता सद्भाव-निरपेक्ष भाव से जनता की समस्याओं को सहानुभूति से समझने और समाधान की है। संकुचित, पूर्वाग्रहों पर आधारित अवधारणाओं और मात्र बलप्रयोग से नक्सलवाद समाप्त नहीं हो सकता।

महावीर सिंह,
पूर्व आईएएस

प्रियंका खीचड़ सीओ गाइड परीक्षा में राजस्थान टॉपर

प्रियंका का सीओ गाइड जयपुर ऋतु ने माला पहनाकर स्वागत किया।

झुंझुनूं, (निसं)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड राज्य मुख्यालय जयपुर के तत्वावधान में 20 व 21 अक्टूबर को आयोजित राज्य स्तरीय सीओ गाइड चयन प्रतियोगी परीक्षा में सिरियासर खुर्द निवासी महावीरसिंह की पुत्री प्रियंका खीचड़ ने राजस्थान प्रदेश में सर्वाधिक अंक पाकर सीओ गाइड परीक्षा ऊतीर्ण की । प्रियंका के राजस्थान टॉप करने पर उन्हें राज्य सचिव डॉ. पीसी जैन द्वारा सीकर जिला आवंटित किया गया। मंडल मुख्यालय जयपुर ट्रेनिंग के लिए प्रियंका ने ज्वॉइन कर लिया। ज्वॉइन करने पर सहायक राज्य संगठन आयुक्त जयपुर नीता शर्मा, सीओ गाइड जयपुर ऋतु शर्मा ने माला पहनाकर, मुंह मीठा करवाकर स्वागत किया।

प्रियंका बचपन से ही स्काउट गाइड संगठन से जुडी रही। प्राथमिक शिक्षा अपने ननिहाल भारु से पूरी करने के बाद कॉलेज शिक्षा रामादेवी महिला महाविद्यालय नूआं से पूरी की तथा राष्ट्रपति अवार्ड पुरस्कार प्राप्त किया। रामादेवी महिला महाविद्यालय में रहते हुए प्रियंका ने भारतवर्ष का प्रतिनिधित्व करते हुए पाकिस्तान में आयोजित अंतरराष्ट्रीय शिविर में सहभागिता की उसके बाद जिला मुख्यालय झुंझुनूं पर रेंजर लीडर के रुप में कार्य किया। खीचड के चयन पर उनके गांव सिरियासर खुर्द व ननिहाल भारु में खुशी का माहौल है। नवनियुक्त सीओ गाइड प्रियंका ने अपनी सफलता का श्रेय अपने नाना स्वर्गीय जवाहरलाल ईसरवाल, नानी, माता-पिता तथा भाई बहन एवं झुंझुनूं जिले के पूर्व सीओ मान महेंद्र सिंह भाटी तथा वर्तमान सीओ महेश कालावत को दिया। झुंझुनूं जिले के स्काउट गाइड कमिश्नर्स, शिक्षा विभाग के अधिकारियों, स्थानीय संघ के सचिवों तथा अनेक स्काउटर्स, गाईडर्स ने शुभकामनाएं प्रेषित की।

पी.डब्ल्यु.डी. मंत्री जाटव के क्षेत्र में ही बन रहीं घटिया सड़कें

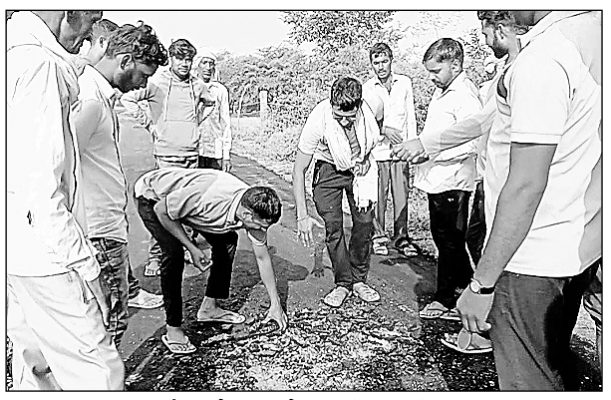

घटिया सड़क निर्माण को दिखाते स्थानीय ग्रामीण।

वैर (निस) । पी डब्लू डी मंत्री भजन लाल जाटव के विधानसभा इलाके में सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा सड़क बनाने का काम चल रहा है । लोगों का कहना है विधानसभा वैर से विधायक भजन लाल जाटव राजस्थान सरकार में पी डब्लूडी मंत्री हैं । जहां बनाई जा रही सड़कों में घटिया क्वालिटी को लेकर स्थानीय लोग विरोध जताने लगे हैं । जिले के कई विधायक अब तक कई बार सवाल उठा चुके हैं । इसके बावजूद भी ठेकेदारों द्वारा घटिया निर्माण सामग्री से सड़कें बनाई जा रही हैं। मंगलवार को विधानसभा मुख्यालय पर भुसावर रोड से सीर सरकार इलाके में रात्रि में ठेकेदार ने घटिया सामग्री से सड़क बनाई । उसे जब सुबह आस-पास के खेतों में काम करने पहुंचे लोगों ने देखा तो जगह -जगह से कुत्तों ने ही सड़क को खोदकर ठेकेदार के निर्माण कार्य की पोल खोल दी । सूचना पर कनिष्ठ अभियंता मनोज धाकड़ ने सड़क का निरीक्षण किया । लोगों ने सड़क की स्थिति बताई तो ठेकेदार के श्रमिकों को फटकार लगाई।

कार्तिक पूर्णिमा पर देवयानी सरोवर में लोगों ने स्नान कर पूजा-अर्चना की

देवयानी सरोवर में कार्तिक पूर्णिमा पर श्रद्धालुओं ने सुबह जल्दी स्नान किया

सांभरझील, (निसं)। सभी तीर्थों की नानी के नाम से विख्यात मां देवयानी सरोवर में कार्तिक माह के अवसर पर अब तक हजारों श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई।

शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को चंद्रग्रहण होने के कारण सूतक लगने से पहले सैकडों की तादाद में महिला श्रद्धालुओं ने सरोवर पर स्थित घाटों पर स्थित अनेक देवी देवताओं के प्राचीन मंदिरों में पूजा अर्चना कर अपने परिवार की खुशहाली के लिए कामना की। यहां पर अनेक जगहों से आकर लोगों ने अपनी दुकानें सजाई जहां पर खरीदारी करने वालों की अच्छी खासी भीड मौजूद रही।

प्राप्त जानकारी के अनुसार देवयानी सरोवर के प्राचीन वैभव व उसकी नष्ट होती आभा को बचाने के लिए 2005 से वर्ष 2018 तक केंद्र व प्रदेश सरकार की ओर से अलग-अलग चरणों में अब तक इस पर करोडों रुपए खर्च किए जा चुके हैं। देवयानी के घाटों पर बने विभिन्न मंदिरों के रंग रोशन, जीर्णोद्धार व अनेक विकास कार्यों के नाम पर पर्यटन और पुरातत्व विभाग ने सिर्फ लीपापोती ही की है। धार्मिक स्थलों पर सरकार की ओर से मंजूर किए गए करोडों रुपए व करवाए गए विकास कार्यों की सही प्रकार से कोई मॉनिटरिंग हुई।

यूजीसी नेट व जेआरएफ में देवेंद्र यादव प्रदेश में अव्वल

खैरथल, (निसं)। प्रदेश के उद्योग विभाग में सेवारत देवेंद्र कुमार यादव ने यूजीसी नेट व जेआरएफ में 99.06 प्रतिशत अंक प्राप्त कर राजस्थान में पहला व देश में पांचवां स्थान प्राप्त किया है। हुलमाणा मुंडावर निवासी स्व. रामकरण यादव के बेटे के

■ देवेंद्र कुमार यादव ने यूजीसी नेट व जेआरएफ में 99.06 प्रतिशत अंक प्राप्त किये

अभिभावक खैरथल के आदर्श नगर निवासी इंजीनियर जयसिंह यादव ने बताया कि उनका भतीजा देवेंद्र कुमार यादव प्रारंभ से ही पढ़ाई में होनहार रहा है। उद्योग आयुक्त जयपुर में ड्यूटी कर रहे देवेंद्र कुमार यादव की इस सफलता पर सभी क्षेत्रवासियों द्वारा उन्हें उज्जवल भविष्य की कामना के साथ बधाइयां दी जा रही है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 9 नवम्बर, 2022

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, कृत्तिका नक्षत्र रात्रि 3:09 तक, वारियान योग रात्रि 9:17 तक, कौलव करण सांय 4:18 तक, चन्द्रमा प्रात: 7:58 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-मेष, मंगल-मिथुन, बुध-तुला, गुरू-मीन, शुक्र-तुला, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज अशून्य शयन व्रत है। पदमक योग रात्रि 3:04 तक है। आज तीर्थराज पुष्कर में स्नान दान विशेष महात्म्य है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:28 तक, शुभ 10:49 से 12:10 तक, चर 2:53 से 4:14 तक, लाभ 4:14 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:10 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:57, सूर्यास्त 5:37

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

मिथुन
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। शुभ कार्य में भाग ले सकते हैं। परिवार में सुविधाएं बढ़ेगी।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कुंभ
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। शुभ-मांगलिक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार होगा।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।